Minor Research Project

MRP(H)-1353/10-11/KLKE 029/UGC-SWRO KLKE 029

Thoughts, Cultural, Heritage and Intuitive Reflections in Indian Fiction Having Senile Charaters as Protogonists

Dr. SHAMLI.M.M

ASST. PROFESSOR, HINDI DEPARTMENT

UNIVERSITY COLLEGE

व्यक्ति महिमा की स्थापना के प्रयासों से व्यक्ति वादी चिंतन और जीवन दर्शन का आविर्भाव और विकास हुआ।हम ने देखा कि आधुनिक युग में व्यक्ति और व्यक्तिनिष्ठता की व्याख्या करने में अस्तित्व वादी दर्शन का स्थान कितना महत्तव पूर्ण है।व्यक्तिवाद के उदय और व्यक्तिवादी जीवनदृष्टि के विकास की यह कहानी निश्चय ही अत्यंत रोचक,चिन्ताद्वीपक और रोमांचकारी है।दर्शन,राजनीति,धर्म आदि क्षेत्रों में यह दर्शन की जो लहरें उठी,उनकी प्रतिध्वनि साहित्य में भी सुनाई पड़ी।

आधुनिक युग के चिंतको और लेखको पर अस्तित्ववादी दर्शन का जितना प्रभाव पड़ा है,उतना शायद ही अन्य दर्शन का पड़ा हो।यह दर्शन व्यक्ति की इकाइ तथा स्वतंत्र अस्तित्व को बाल देने वाला जीवन दर्शन है।यह दर्शन मानव का मानव के स्वत का अन्वेषण करता है।मानव के

अकेलेपन का अर्थ खोजता है और व्यक्ति-मानव को एक नया आयाम प्रस्तुत करता है।आधुनिक जीवन की संकीर्णता में व्यक्ति मानव की अर्थवत्ता को खोजने के कारण व्यक्तिवादी उपन्यकरो की रचनाओ में अस्तित्ववाद का,प्रत्यक्ष या परोक्ष स्वर का आना स्वाभाविक है।पूरा साहित्य इसी दर्शन से भरा पड़ा है।इस चिंतनधारा से भारतीय उपन्यास साहित्य भी अछूता नहीं रहा।यहाँ अधयन को लिये गए चारो भाषा के चारो उपन्यास इसके प्रतिनिधि में रख सकते है।इनमें व्यक्तिवाती जीवनदृष्टि को आधुनिक भूमिका में प्रस्तुत किया गया है।व्यक्ति की पीड़ा और निस्सह्यता,अलगाव,अकेलापन,वर्तमान को सबकुछ मानना ,जिजीविषा,मृत्युभय,जीवन की व्यर्थता बोध आदि आधुनिक जीवन के आयाम है।

भारतीय उपन्यासों की व्यक्तिमूलक चेतना भाव और शिल्प में एक नया मोड ग्रहण करती है।व्यक्ति का मृत्युबोध,असुरक्षा और अकेलापन की एक सृदृढ़ दार्शनिक भूमि में प्रतिष्टित करके यहाँ उसका अंकन किया गया है।अकेलेपन का बोध चारों उपन्यासों में मूल स्वर के रूप में परिव्याप्त है।मानव की अस्तित्व परक वेदना और परिवेश को संवेदना के स्तर पर पैदा किया गया है।वातावरण की निर्मिति भी भावानुकूल है।मनवनीति की पहचंपरख समान्तर रूप में हुई है।ज़िन्दगी और मौत के बारे में आधुनिकता के बोध को व्यक्ति के धरातल पर आँका गया है।